ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 72-73

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

राजनीतिक प्रलोभन : सुरक्षा के लिए घातक

डॉ0 अजय कुमार पाण्डेय
एसो0 प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, श्री मु0म0 टाउन पी0जी0 कॉलेज–बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-13.10.2023, Revised-20.10.2023, Accepted-25.10.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः बहुरंगी व परिवर्तित मौसम की मानव मिजाज, कामना या विचार की उत्साहिता में प्रभु की इच्छा (भाव) झलझलाती हवा में पौधों का लहलहाना, कॉपले का निकलना, अहलाद कुसुमाने से कलियों का आना व 'किरण' के स्पर्श में पुष्प (फूल) का खिलना आत्मिक रूप से पवित्रतम बंधन में समेकित कर लेता है। पुष्प कली पर किरण का स्पर्शण व पुष्प का परिणयन प्रभु को अत्यंत सूक्ष्मता से श्री चरणों में समर्पण सहज पग है। इस नश्वर शरीर का मूलाधार भक्तिभाव की कामना है जिसमें आकर्षण, आनन्द, उल्लास, अपेक्षाएं, चाहत, शान्ति व संतुष्ठि निहित है। वनस्पति की स्निग्धता, सरसता, मृदुता, सुकुमारता और सुन्दरता में प्रभु के स्निग्धन सहज भाव का मूर्तिमान का अलंकरण व वास्तविक स्वरूप की प्रेरणात्मक अनुभूति की जा सकती है।

कुंजीभूत शब्द– बहुरंगी, मानव मिजाज, कामना, अहलाद, परिणयन, भक्तिभाव, आकर्षण, आनन्द, उल्लास, अपेक्षाएं, सुकुमारता।

विविध बहुसंख्यक वनस्पतियाँ, वन, प्रजातियाँ शरीर के फेफड़े (ऑक्सीजन) व पारिस्थितिकी संतुलित कर बिना घातक/विनाशक हथियार के सुरक्षात्मक प्रहरी है वही प्रकृति का स्वरूप यथा पर्वतों की गोद में शिशु की तरह उछलती, हरहराती, घरघराती, छलांग लगाती व अल्हड़ किशोरी की तरह कूद मारती नदियां, बसुन्धरा में धीर–गम्भीर प्रौढ़ सौन्दर्यी स्त्री की कुछ पल ठहरन, अलसाई थकी टूटन जैसी अहसास कराकर शनैः–शनैः बाहों में जकड़कर प्रेमसागर में मनतः डूबते हुए हिलोरों के साथ कभी मध्य मझधार या साहिल इत्यादि जैसे प्रदर्शन द्वारा पौरूष विचारधारा को केन्द्रित करती है।

यह उसकी बंकिमता, चपलता, बिछलन, फिसलन, अल्हड़पन, आलस्यता, चमक, बहक, सनक, लहर, कौध, हुलास, उल्लास गति, आवेग, आवर्त, संकोच, उछाल, लास्य, थिरकन, अटकन, जागना, कौधना, निशा शयन में मानव उलझकर अपने मानवीय मूल्य का परित्याग करता है, जबकि उसे पता है जीवन की हरिता प्रकृति पर है, प्रलोभन पर नहीं, किन्तु आज मानव स्वार्थपरता के दौर में पारिस्थितिकी का विनाश, प्रकृति का दोहन, पर्यावरण संरक्षण का प्रलोभन विकास के मुखौटा में प्रचारित, प्रसारित करते हुए ईर्श्या द्वेष, घृणा, वैमनव्यता, भ्रष्टाचारिता, फौरेबिता, झूठ इत्यादि को अनिवार्य आवश्यकता के साथ आत्मसात् कर लिया है परिणामतः जो जहाँ है वही अशान्त हैं।

शान्त हेतु प्रकृति की वादियों में पर्यटन किन्तु पर्यटन स्थल को कृत्रिम स्वरूप में परिवर्तित कर अर्थ संग्रह का मुख्य विकल्प बना दिया गया जिससे विविध गैर परम्परागत असुरक्षा यथा ई–वेस्ट, पी–वेस्ट, को–वायरस, एक्स–वायरस एम व आई रेंज इत्यादि प्रमुखता में है। राजनीतिक प्रलोभन व व्यक्तिगत स्वार्थी हित में अपने मानसिक शुद्धि–बुद्धि को पूर्णतः खो चुका है जबकि–

'अपरयामितश्चन्यां प्रकृति विद्धि में परां जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्ध्यति जगत अर्थात परा प्रकृति ने ही जीवों को धारण किया है। परा प्रकृति चैतन्य रूपा है। चेतना ही परा प्रकृति है जो शुद्ध और सर्वव्यापी है यह परा प्रकृति पंचविधा है।

राजनीतिज्ञों/कुटनीतिज्ञों द्वारा विधानसभा, लोकसभा, नगर निकाय चुनाव के दौरान जनमानस के लिए विविध वाकपटु युक्त प्रलोभन दिए गए थे दिए जाते है और दिए जाएंगे जिससे आप सभी चिर–परिचित भक्त भोगी है। पालिखिन गुटर गुटखा (पान मसाला), मद्यपान, एक परिवार एक नौकरी, स्मार्ट इण्डिया, स्वच्छ भारत समर्थ भारत इत्यादि असंख्य प्रलोभन वर्ष 2013–2014 के लोकसभा चुनाव में दिया गया। प्रमुखतः गोरखपुर संसदीय क्षेत्र में दक्षिणांचल को रेल सेवा, मेट्रो सेवा, गोरखपुर परमाणु उर्जा संयंत्र, जलयान सेवा (नहर) से जोड़ने के साथ ही विविध विकासोन्मुखी प्रलोभन दिया गया, किन्तु स्थिति यह है कि लोकप्रिय भोजपुरी गायक सांसद रविकिशन जी वर्तमान गोरखपुर मुख्यालय से तहसील तक सड़क मार्ग को ठीक नही करा सके और नहीं मेरे तहसील कस्बें में नाला निर्माण (जल, निकासी) करा सके है अर्थात अभी तक सभी प्रलोभन ढॉक के तीन पात सिद्ध हो रहे है, जिससे असुरक्षा यथा स्वास्थ्य, बेकारी, बेवसी, यात्रा कष्ठकारी प्रमुख है।

गोरखपुर मुख्यालय से तहसील मुख्यालय तक इलेक्ट्रिक सीटी बस सेवा एकल चलायी गयी, जो नवम्बर, 2023 से बन्द कर दी गयी है। गोरखपुर परमाणु उर्जा संयत्र को लगाने के लिए एन पी सी आई एल ने एटॉमिक एनर्जी रेगुलेटरी बोर्ड के मानक अनुक्रम में परमाणु उर्जा संयत्र से 6.6 किमी. क्षेत्र में दस हजार से अधिक की आबादी न हो, यद्यपि गोरखपुर का क्षेत्र इस अनुपालन में नहीं है, बावजूद इसके परमाणु ऊर्जा संयत्र के लिए 1312 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर 700 मेगावाट वाले 4 रिएक्टर लगाने की बात की गयी भूमि अधिग्रहण कानून 1894 की धारा–4 के तहत व स्थानीय प्रशासन द्वारा धारा–6 के तहत नोटिस जारी कर दिया गया, किन्तु यह अभी तक अमल में नहीं लाया गया, जो खेतिहर भूमि किसान व अन्य को वरदान सिद्ध हुआ है कि अपने पूर्वजों द्वारा रक्त व पसीने से बचाई गई संचित भूमि है और तो और हिन्दू सनातन धर्म में अपनी माँ को बेचने या नीलाम करने से निकृष्ठतम् कुछ और नहीं हो सकता। सत्य है कि गोरखपुर की किसान संघर्ष समिति एक इंच जमीन न देने के अपने फैसले पर डटी है।

स्थानीय किसान कहते है कि मर जायेगे पर जमीन नहीं देंगे परमाणु उर्जा से होने वाले क्षति के प्रति जागरुक ही नहीं चिन्तित भी है कि भारत द्वारा सन् 1974 ई0 में परमाणु परीक्षण के पश्चात् आज तक यह सत्ताधीश द्वारा मात्र यह स्वाध्ये भरी गई है कि शान्ति के क्षेत्र में हम इसका प्रयोग करेंगे, जबकि वास्तविकता यह है कि बिजली, सहित अन्य आवश्यक उपकरण का आयात अर्थात दूसरे राष्ट्र से मूल्य देकर क्रय किया जाता है। परमाणु उर्जा से बिजली उत्पादन नही कर सके है। निष्कर्षतः मानव द्वारा अपने स्मरण शक्ति

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

को दृष्टिगत रखते हुए दृढ़ता के साथ अपनी रक्षा, सुरक्षा व संरक्षा का एक समझदार, जागरूक प्रहरी बनकर भावी पीढ़ी को नवीनत्तम उर्जा का प्रेरणात्मक पुरस्कार एवं अनमोल सम्पत्ति दें। इसी शुभेच्छा के साथ :

महंगे लिबास का जो शौक था कभी
आज वक्त है कि कफन का मूल्य नहीं पूछते
जिन्दगी प्रलोभन से नही गुजरती
अपने मूल्य व प्रभु को समझते क्यों नहीं ?

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पर्यावरण और आसन्न महाविनाश–श्री गुरु प्रकाश वेद।
2. परमाणु उर्जा संदर्भ और सवाल–भारद्वाज राकेश।
3. मिथकीय ऑकलन – दिसम्बर, 2012.
4. सुनहरे कल की ओर – नई दिल्ली।
5. पूंजी के निशाने पर पानी–डायमण्ड प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. स्वविचार।

*****